ALOCHNATMK OR SANSKRTIK ANUSHILAN G.K.V.

काश्यप संहिता का

आलोचनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

संक्षिप्त विवरण एवं विषय सूची

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

में पी-एच डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशक :
डा० ज्योतिर्मित्र
पी-एच०डी० (द्वय) एफ०आर०ए०एस० (लन्दन)
रीडर मौलिक सिद्धान्त विभाग
अनुसन्धान एवं स्नातकोत्तर आयुर्वेद संस्थान
काशी हिन्दू विश्व विद्यालय—वाराणसी

एवं

वैद्य धर्मदत्त जी
भू० पू० प्राचार्य
आयुर्वेद महा विद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

प्रस्तुतकर्ता :
योगेश चन्द्र मिश्र
एम०ए०, साहित्याचार्य
आयुर्वेदाचार्य (बी०ए०एम०एस)

वर्ष १९७७ ई० }

{ पंजीकरण संख्या ७३०००६

काश्यप संहिता का आलोचनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

संक्षिप्त विवरण

कश्यप एवं काश्यप का नाम संस्कृत वाङ्मय के लिये सुपरिचित है। चिकित्सा क्षेत्र में इस नाम को पुनर्संस्थापित करने का श्रेय नेपाल राज गुरु पं० हेमराज शर्मा द्वारा प्रकाशित ताडपत्रों पर आधारित काश्यप संहिता अथवा वृद्ध जीवकीय तन्त्र को है। यह ग्रन्थ अष्टांग आयुर्वेद के कुमार भृत्य अंग की प्रतिनिधि भूत एक मात्र धरोहर है। कश्यप से सम्बद्ध अन्य किसी ग्रन्थ या पाण्डुलिपि में यह विषय वर्णित नहीं है। उपलब्ध ताडपत्रों में प्रारम्भ के २८ ताडपत्रों को वर्णित नहीं किया गया है। ग्रन्थ को ८ स्थानों तथा १२० अध्यायों में विभाजित करने के उपरान्त ८० अध्यायों वाले खिल स्थान का वर्णन है। खिल स्थान के प्रारम्भिक २५ अध्यायों तक का अंश ही उपलब्ध है।

बालक राष्ट्र के भविष्य की निधि होते हैं। सुकुमार होने के कारण उनकी अधिक चिन्ता अपेक्षित है। उनको शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करने में सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इस तथ्य से कोई भी मना नहीं कर सकता है। काश्यप संहिता इसी पवित्र हेतु अस्तित्व में आकर मनीषियों द्वारा संस्कारित /प्रतिसंस्कारित की गयी। इस सन्दर्भ में कश्यप /वृद्धजीवक तथा वात्स्य के नाम संहिता में उपलब्ध है। इनका ऐतिहासिक विवेचन तथा अन्य उपलब्ध आचार्यों से सम्बद्ध तथ्यों को शोध प्रबन्ध में संगृहीत किया गया है। भाषा तथा शैली की दृष्टि से अनेक स्तर संहिता में उपलब्ध हैं। वैदिक संहिताओं

के दार्शनिक सूत्र संहिता में पुष्पित पल्लवित होते दिखाई पड़ते हैं। न्याय- सांख्य व जैन दर्शनों का प्रभाव भी ग्रन्थ पर पड़ता दिखाई देता है। तत्कालीन समाज के सभी वर्गों का चित्र संहिता में उपलब्ध है एतद्विषयक सामग्री से स्पष्ट हो जाता है। किसी भी प्राचीन आयुर्वेद संहिता में देश की भौगोलिक स्थिति एवं विदेशों से सम्बन्धों का इतना व्यापक वर्णन उपलब्ध नहीं होता है। वैदिक मन्त्रोच्चारण पूर्वक कर्मकाण्ड, पौराणिक आख्यान, शैव जैन तथा बौद्ध धर्म के विभिन्न प्रसंगों से स्पष्ट है कि संहिता के धार्मिक विचारों का विकास पर्याप्त समय में हुआ होगा। चिकित्सा व अन्य सुविधाओं की उपलब्धि में धन की महत्ता स्थापित हो चुकी थी। खाद्य सामग्री को सुस्वादु व संस्कारित करने की अनेक पद्धतियों से समाज परिचित था। जातहारिणी एवं बाल-ग्रह आदि संक्रामक व्याधि समूहों के विस्तार रोकने तथा चिकित्सा में भी समाज सतर्क था। फक्क/कुक्कुणक आदि अनेक बाल रोगों का वर्णन मात्र इस ग्रन्थ में ही उपलब्ध होता है।

संहिता के अध्ययन से यह विचार पुष्ट होता है कि चिरकाल से सतत प्रवाहमान 'नात्मार्थं नापि कामार्थं मथ भूत दयां प्रति' के आधार पर खड़ी भारतीय संस्कृति निश्चय ही पीड़ित मानवता को शान्ति प्रदान करने तथा बाल्यावस्था से ही संस्कारों एवं चिकित्सा द्वारा प्राणि मात्र को नीरोग रखने में सहायक सिद्ध होगी। काश्यप संहिता संस्कृत एवं आयुर्वेद साहित्य का अप्रतिम ग्रन्थ है। इसका किसी भी दृष्टिकोण से अद्यावधि अध्ययन नहीं हो सका। प्रस्तुत काश्यप संहिता का आलोचनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन इस न्यूनता की पूर्ति में सहायक है।

काश्यप संहिता का आलोचनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

विषय सूची

काश्यप संहिता का आलोचनात्मक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन

विस्तृत विषय सूची

अध्याय तृतीय - काश्यप संहिता की दार्शनिक पृष्ठ भूमि

१- दर्शन एवं आयुर्वेद का समान लक्ष्य

२- का०सं० में उपलब्ध दार्शनिक विवेचन

पुनर्जन्म एवं कर्म फल, सृष्टि समुदय, क्षेत्र एवं क्षेत्रज्ञ, द्रव्य संग्रह एवं उनके लक्षण, आत्मा के द्रव्य, मन द्रव्य, महाभूतों के गुण, महाभूतों के गुणों की क्रमशः वृद्धि, हृदय का मन एवं इन्द्रियों पर प्रभाव, वागिन्द्रिय के दो भाग तथा मूक वाधिर्य, मन तथा इन्द्रियों का कर्तव्य तथा आत्मा का दृष्टा भाव ।

३- काल द्रव्य

काल का प्राधान्य, मात्रा निर्धारण में काल की उपयोगिता, काल के विभिन्न विभाजन, काल से व्यहृत आयु, औषधि सेवन काल, काल का विशिष्ट विभाजन षडयुग, युग एवं सत्वादि त्रिगुण, संवत्सर में पंचऋतुओं का वर्णन, षडऋतु विभाजन, काल एवं वय, दन्तोपत्ति में काल (आयु), स्वेदन कर्म में काल, शिक्षा में काल व नक्षत्र, मलमास विचार धूपन द्रव्य और काल, गर्भस्थापक वन्ध और काल,

४- दिक द्रव्य -

शिक्षा प्राप्ति और दिशा, विषम ज्वर और दिशा जल एवं दिशाओं का प्रभाव, धूपन द्रव्य और दिशायें वरण वन्ध और दिग्वन्ध, दिशा तथा देश ।

अध्याय तृतीय -

५- गुण विवेचन

आत्मा के गुण, मन के गुण, पंच महाभूतों के गुण, विशति गुण, विभिन्न गर्भज भावों के गुण, अन्य सन्दर्भों में उपलब्ध गुण, परिणाम और माप,

६- प्रकृति एवं सत्त्व

प्रकृति सत्त्व सत्त्वों के भेद एवं उपयोगिता, शुद्ध सत्त्व एवं उसके भेद, राजस सत्त्व एवं उसके भेद, तामस सत्त्व एवं उसके भेद, त्रिगुण सिद्धान्त वालकों का पक्ष एवं सत्त्व ।

७- स्वप्न

स्वप्न, स्वप्नों के प्रकार, फलवत्त, फलवान स्वप्न, शुभ एवं अशुभ स्वप्न, स्वप्न एवं गृह बाधा, व्रण एवं स्वप्न, गर्भिणी के स्वप्न, अशुभ स्वप्नों का परिहार ।

अध्याय चतुर्थ - सामाजिक अनुशीलन

१- चिकित्सा एवं चिकित्सक

शिक्षार्थी के गुण, आचार्य के गुण, शिक्षार्थी का आचार्य के निकट जाना, अध्ययन विधि, अध्ययन में अवकाश, अध्ययन में अन्य सावधानियाँ शिष्य के प्रति उपदेश, चिकित्सा क्षेत्र में प्रवेश, अन्य चिकित्सकों के साथ व्यवहार, आयुर्वेद का अध्ययन क्यों ? चिकित्सक के प्रति समाज में भाव चिकित्सक की स्थिति एवं उपलब्धि ।

२- स्त्रियों की स्थिति

धात्री विचार, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, जातहारिणी एवं स्त्रियां,

अध्याय चतुर्थ

३- काश्यप संहिता और बालक

संहिता का विषय- कौमार भृत्य, दन्तोद्भेद, बालकों से सम्बन्धित संस्कार, बच्चों के खिलौने।

४- आयुष्मान बालकों के लक्षण

५- बाल रोग और परिचर्या

६- वर्ण व्यवस्था और जाति परम्परा

७- का० सं० कालीन समाज में वेश भूषा

८- मद्यपान एवं धूम्रपान

९- सामान्य सामाजिक विश्वास एवं आस्थायें

अध्याय पंचम- भौगोलिक अनुशीलन

(क) १- चिकित्सा शास्त्र और भौगोलिक तत्व
देश एवं भूमि का प्रभाव, शरीर एवं जल, जल पर भौगोलिक तत्वों का प्रभाव, दिशा एवं नक्षत्रों का प्रभाव।

२- देशगत विविधता एवं काश्यप संहिता में देशों का विभाजन।
दिशाओं के अनुसार विभाजन, भोजन सात्म्य और देश, जातहारिणी और देश,

३- स्वप्न एवं भौगोलिक तत्व

४- देश एवं विदेश शब्दों का प्रयोग

५- उत्तर वैदिक काल का भौगोलिक विभाजन

६- जैन एवं बौद्ध साहित्य में देश विभाजन

(ख) काश्यप संहिता में उपलब्ध देश व जाति वाचक संज्ञायें व भौगोलिक तत्व।

अध्याय षष्ठ:

काश्यप संहिता में उपलब्ध धार्मिक विवेचन

१- धर्म अभ्युदय और निःश्रेयस का साधन

२- काश्यप संहिता और धर्म

३- देव और चिकित्सा शास्त्र

विभिन्न देवता- वेदकालीन देव तत्व और वैदिक देवार्चन का स्वरूप ।

४- काश्यप संहिता का वैदिक सम्बन्ध

५- का०सं० में उल्लिखित विभिन्न देवता

त्रिदोष का देव तत्वों से सम्बन्ध, अग्नि का प्राधान्य, धूपन के देवता, वनस्पतियों के देवता एवं उपचार ।

६- पूजन द्रव्य एवं फल

७- शैव धर्म का प्रभाव

सन्तानोत्पत्ति एवं शिव, स्कन्द के पिता महादेव माहेश्वर धूप, राजयक्ष्मा में रुद्र पूजन, विषम ज्वर में शिव पूजन ।

८- ग्रह बाधा पर शैव प्रभाव

पूतना ग्रह की उत्पत्ति, मुखमण्डलिका नामक ग्रह पर शैव प्रभाव,

९- रेवती ग्रह का महत्व

रेवती के अनेक नाम, रेवती की अर्चना का निर्देश रेवती पूजन दिवस, रेवती ग्रह द्वारा उत्पन्न रोग,

अध्याय षष्ठ:

१०- ग्रह दोषों का धात्री दुग्ध पर प्रभाव

११- अन्य संहिताओं मे बाल ग्रह

सु० सं० मे बाल ग्रह, कुमार तन्त्र मे बाल ग्रह,

अग्नि पुराण तथा बाल तन्त्र मे ग्रह बाधा,

बालतन्त्र मे वर्णित ग्रह बाधाओं का अन्य क्रम,

अन्य ग्रह बाधाये, कुमार तन्त्र मे ग्रह बाधा,

अष्टांग हृदय मे ग्रह बाधा, का० सं० मे ग्रहों के नाम

एवं संख्या,

१२- ग्रह बाधा- स्वरूप और प्रभाव

१३- लक्षणों के आधार पर विभिन्न रोगों से साम्य,

१४- चिकित्सा मे धार्मिक कृत्य

गर्भिणी का आचरण, रेवती बाल ग्रह व

चिकित्सा, अशुभ स्वप्न और गायत्री,

प्रसवकाल और धार्मिक कृत्य, सन्तति एवं

देवता तथा धार्मिक कृत्य, पुत्रीय इष्ट विधान ।

१५- गर्भिणी के आवास आचरण मे देवार्चन

१६- भू देवता का पूजन मन्त्र ।

१७- श्राद्ध आदि धार्मिक कार्यों मे दान्तो

का महत्त्व ।

१८- गृहस्थों द्वारा सेवनीय धार्मिक कृत्य

१९- अनेक रोगों का कारण- अधर्म,

अध्याय सप्तम : आर्थिक अनुशीलन

१- धन के आधार पर विभाजन
२- प्रचलित व्यवसाय
३- धातुएँ एवं शिल्प

अध्याय अष्टम: **काश्यप संहिता में आहार शास्त्र**

१- आहार का विभाजन एवं महत्त्व
२- क्षुधा की उत्पत्ति
३- दुग्ध एवं दुग्ध मूलक आहार
४- मांसाहार
५- विविध खाद्य पदार्थों का निर्माण
६- लशुन एवं गन्ध महत्त
७- क्षार एवं लवण प्रयोग
८- भोजन विधि
९- विभिन्न प्रसंगों पर विशिष्ट आहार द्रव्य

अध्याय नवम: **काश्यप संहिता का चिकित्सा शास्त्रीय वैशिष्ट्य**

१- विशिष्ट स्थल

लेहन, प्रयोग परीक्षा दन्त विज्ञान, स्नेहों की प्रयोग विधियाँ, बालकों में स्वेदन, स्वेदन के भेद, बाल रोग ज्ञान, चिकित्सक की श्रेष्ठता का प्रतिपादन, चिकित्सा में बालकों का विशिष्ट विचार उपद्रवों की चिकित्सा, त्रिदोषों में देव वाद, आकृति से स्वभाव ज्ञान, काश्यप संहिता और शारीर शास्त्र।

अध्याय नाम-

२- बालकों के विभिन्न रोग और चिकित्सा शास्त्रीय वैशिष्ट्य-बालग्रह चिकित्सा-अश्मरी-व्रणोपक्रम व्रण वन्ध-पिडिकायें-अरिकीलिका-क्षत एवं व्रण-उरोधात-मदात्यय -

३- पञ्चक रोग

४- धात्री चिकित्सा

५- पंचकर्म विज्ञान

वस्ति नस्य-बालकों में नस्य विधान

६- धूपन चिकित्सा

७- लशुन का विशिष्ट प्रयोग

८- कद तैल कल्प

९- बालकों के नेत्र रोग

१०- जातहारिणी-

उत्पत्ति एवं कारण-संक्रमण- प्रसार में सामाजिक कारण-जातहारिणी ग्रस्त के लक्षण -साध्य-याप्य-तथा असाध्य जातहारिणी भेद-लोक भेद से जातहारिणी के भेद-जातहारिणी के सामान्य विवेचन जातहारिणी से ग्रस्त लक्षण-वरण वन्ध-मातंगी विधा एवं प्रयोग विधि ।

अध्याय नवम-

उपसंहार